

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी व्यंग्य साहित्य - एक अनुशीलन

डॉ.दिलीपकुमार रा. गुंजरगे

हिंदी विभाग,

जयक्रांती कला वरिष्ठ महाविद्यालय, लातूर

E-mail id — drgunjarge1@gmail.com

प्रस्तावना:-

व्यं

ग्य जीवन का शाश्वत और प्रमुख स्वर है। जीवन की अभिव्यक्ति साहित्य में होती है। व्यंग्य जन-जीवन की आवश्यकताओं को समेटकर अनुभूत स्थितियों के आधार पर साहित्य सृजन करता है। वह समाज का सच्चा सचेतक और उन्नायक है। व्यंग्य समाज की पतनोन्मुखी अवस्था पर केवल उपहास कर ही संतोष नहीं करता बल्कि समस्या की तह में पौठकर मिथ्याचार, पाखंड और अन्याय की बखिया उधेड़ता है। समाज में जब आदर्श और यथार्थ एवं विचार और कार्य के बीच अन्तर्विरोधों की संघर्षमयी स्थिति होती है तब व्यंग्य की सृष्टि होती है। व्यंग्य जीवन को अधिक स्वस्थ, सुंदर, भव्य और अधिक उदात्त बनाने के लिए अमानवीय, भ्रष्ट, कलुषित परम्पराओं, रीतियों और धारणाओं पर प्रहार करता है। व्यंग्य सत्य के हाथ का सर्वाधिक पवित्र अस्त्र है। व्यंग्य एक ऐसी साहित्यिक रचना है, जिसमें व्यक्ति तथा समाज की कमजोरियों, दुर्बलताओं, कथनी एवं करनी के अंतरों की समीक्षा अथवा निंदा को भाषा को टेढ़ी भंगिमा देकर अथवा कभी-कभी पूर्णतः सपाट शब्दों में प्रहार करते हुए की जाती है। वह पूर्णतः अगम्भीर होते हुए भी गम्भीर हो सकती है, निर्दय लगते हुए दयालु हो सकती है, प्रहारात्मक होते हुए तटस्थ लग सकती है। व्यंग्य पाठक के क्षोभ तथा क्रोध को जगाकर प्रकारांतर से उसे अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए तैयार करता है। व्यंग्य युग की विसंगतियों की वौदग्ध्यपूर्ण तीखी अभिव्यक्ति है।

व्यंग्य समाज का चिकित्सक है। चिकित्सक जौसे बिना राग-द्वेष के मरीज के बीमारी को दूर करने का प्रयास करता है, उसी तरह व्यंग्य भी समाज की चिकित्सा करता है।

व्यंग्य समाज मानस का एक्स-रे हैं, इसलिए साहित्य की अन्य विधाओं की अपेक्षा वह अधिक यथार्थ और कटु होता है। आधुनिक व्यंग्य का सुत्रपात भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से होता है। भारतेन्दु ने सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनयिक विसंगतियों पर तीखे व्यंग्य प्रहार किये हैं। 15 अगस्त 1947 को भारत करीब दो सौ वर्षों के अंग्रेजी गुलामी से मुक्त हुआ। भारत के स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ गाँधीजी के अखंड भारत का सपना टूटा। विभाजन की विभीषिका ने असंख्य परिवारों को तहस-नहस और बेघर कर दिया। भारतीयों को चिरवांछित स्वतंत्रता मिली, परंतु उसके हर्षोल्लास को पीड़ा, वेदना, यातना की कड़वी घूटों का पान करना पड़ा। देश का शीघ्र ही नया संविधान बना और उसके अंतर्गत 1952 में प्रथम चुनाव देश की संसद और राज्य की विधान सभाओं के लिए हुए। आम आदमी की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए पंचवर्षीय योजनाएँ बनीं। समाजवाद का नारा लगाकर भी पूँजीवाद ही फलता - फूलता रहा। सातवें दशक तक आते आते बेकारी, महँगाई, भ्रष्टाचार ने विकराल रूप धारण कर लिया जिससे आम लोगो की दशा बद से बदतर होती चली गई। समाज में व्याप्त इन विसंगतियों की तीखी अभिव्यक्ति व्यंग्य के माध्यम से हुई। 'कथनी और करनी के अंतर को पाटने के लिए साठोत्तर काल की नई पीढ़ी ने व्यंग्य की कलम से गोलियों की बौछार की।

स्वातंत्र्योत्तर काल में व्यंग्य का स्वतंत्र विधा के रूप में अविर्भाव हुआ। व्यंग्य लेखन कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध आदि रूपों में सामने आया। पत्रकारिता ने व्यंग्य को प्रभावशाली मंच दिया। राजनीति की विडंबना भरी उर्वरक भूमि पर व्यंग्य का कैक्टस लहराया। डॉ.श्यामसुंदर घोष इस संदर्भ में लिखते हैं - "आज जब कि सम्पूर्ण समाज व्यवस्था और शासन तंत्र शुरु से लेकर आखिर तक भ्रष्ट, कलुषित और अमानुषिक है, तो साहित्य का प्राथमिक कर्तव्य यही है

कि वह पहले हथियार की भाँति प्रयुक्त हो। अब तलवार की जरूरत पहले है।" 01 राजनीति में नैतिक मूल्यों का हास, समाज के विभिन्न अंगों में व्याप्त भ्रष्टाचार, कथनी-करनी में अंतर, घोर साम्प्रदायिकता, बेरोजगारी, भाई-भतीजावाद आदि के परिणाम स्वरूप व्यंग्य विधा का विकास हुआ। साहित्य के विभिन्न विधाओं के माध्यम से व्यंग्य को प्रस्तुति मिली है। हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, रवीन्द्रनाथ त्यागी, श्रीलाल शुक्ल, लतीफ घोंघी, डॉ. शंकर पुणताम्बेकर, बरसानेलाल चतुर्वेदी, नरेंद्र कोहली, डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी, प्रेम जनमेजय, सुदर्शन मजीठिया आदि लेखकों ने हिंदी व्यंग्य साहित्य को समृद्ध बनाया है।

हरिशंकर परसाई हिंदी व्यंग्य क्षेत्र के ऐसे हस्ताक्षर हैं जिनके कारण व्यंग्य को विधा का दर्जा प्राप्त हुआ। व्यंग्य लेखन परसाई की मजबूरी नहीं बल्कि परिस्थितियों का दबाव था। इस संदर्भ में डॉ. सुरेश माहेश्वरी कहते हैं - "स्वतंत्रता के बाद देश की परिस्थिति ने ऐसी करवट ली कि दिन-दूनी रात चौगुनी रफ्तार से सातवें दशक के खत्म होते-होते बेरोजगारी, महंगाई और भ्रष्टाचार ने विकराल रूप धारण कर लिया और इनके खिलाफ मोर्चा लेने के लिए साहित्य की प्रचलित विधाएँ लंगड़ी सी पड़ गई। ऐसी दशा में परिस्थिति की विसंगतियाँ और कुरुपताओं को प्रभावपूर्ण ढंग से पेश करने के लिए सर्वथा नई विधाएँ चल पड़ीं, जिनमें व्यंग्य प्रमुख है।" 02 परसाई ने अपनी रचनाओं के माध्यम से युग की विसंगतियों का दस्तावेज ही पेश किया। विसंगतियों पर पूरी निर्ममता से प्रहार कर ये आधुनिक कल के कबीर बन गए अर्थात् आधुनिक हिंदी व्यंग्य के प्रवर्तक या शिल्पकार पद पर आसीन हो गए।

परसाई का व्यंग्यफलक बहुत विस्तृत और व्यापक है। उनके व्यंग्य में विडम्बनाओं की गहरी पकड़, पौनी सुक्ष्म दृष्टि और बेलाग स्पष्टवादिता के दर्शन होते हैं। 'सदाचार की तावीज', 'दस दिन का अनशन' 'जैसे उनके दिन फिरे' जैसी व्यंग्य रचनाओं के माध्यम से परसाई ने सुधार और आदर्श के नाम पर चलने वाले छलकपट को उजागर किया है। व्यक्ति, समाज या राजनीति में फैली विषमता, बुराई का ऐसा कोई भी पक्ष नहीं होगा जो परसाई के मारक दृष्टि से बचा हो। 'घायल बसंत' में दहेज के कारण होनेवाले बेमेल विवाह पर परसाई ने व्यंग्य किया है। केवल विसंगतियों पर प्रहार कर परसाई चुप नहीं बैठते बल्कि उनके कारणों को ढूँढकर उनका समाधान

भी देते हैं। 'सदाचार की तावीज' 'दस दिन का अनशन' 'जैसे उनके दिन फिरे' जैसी रचनाओं के माध्यम से इन्होंने सुधार और आदर्श के नाम पर चलने वाले छलकपट को उजागर किया है।

परसाई का अधिकांश लेखन राजनीति से संबंधित है। इन्होंने भारतीय राजनीति के सभी महत्वपूर्ण मुद्दों पर व्यंग्य किया है। संसद, विधान सभाएँ, न्यायपालिका, योजना आयोग को अपने व्यंग्य का लक्ष्य बनाया है। यह सभी पूँजीवाद की देन होने से आजादी के अनेक वर्षों के बाद भी परिवर्तन नहीं हुआ ऐसा परसाई का मानना है। आजादी के बाद तरह तरह के झूठे आश्वासनों और नारों की बाढ़ आ गई जिसके बद पर पार्टियाँ अपने मुखोटे बदल-बदल कर सत्ता तक पहुँची। फिर वह चाहे समाजवाद का नारा हो या गरीबी हटाओ का इन सब की विकृतियों का पर्दाफाश परसाई ने 'भेड़ और भेड़िये' नामक रचना में किया है। परसाईजी ने 'पेट का दर्द और देश' 'लंका विजय के बाद' 'धर्म क्षेत्रे कुरुक्षेत्रे, ठिठुरता हुआ गणतंत्र' 'इतिहास का सबसे बड़ा जुआ' आदि रचनाओं में राजनैतिक विसंगतियों को, इसमें निहित भ्रष्टाचार, स्वार्थ, महत्वाकांक्षा, अवसरवाद, चरित्रहीनता, भाई-भतीजावाद, पाखंड पर डटकर लिखा है। परसाईजी प्रतिबद्ध रचनाकार है और उनकी प्रतिबद्धता मार्क्सवादी चिंतन के प्रति है वह एक ऐसा समाज चाहते हैं जहाँ सामान्य व्यक्ति राहत की साँस ले सके, जहाँ शोषण का कोई नामोनिशान ना हो।

व्यंग्य विधा के क्षेत्र में परसाई के बाद दूसरा महत्वपूर्ण नाम आता है शरद जोशी का। इन्होंने अपनी पूर्ण क्षमता के साथ जीवन के सभी क्षेत्रों की विसंगतियों पर प्रहार किया है। 'अतृप्त आत्माओं की रेल यात्रा' 'बुद्ध के दाँत' में इन्होंने धर्म के क्षेत्र में व्याप्त ढकोसलों, पाखंडों, और धर्म के नाम अनैतिकता के अड्डे बने धर्मस्थलों को खूब आड़े हाथों लिया है। डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी जोशीजी के संदर्भ में लिखते हैं - "हिंदी व्यंग्य में संप्रेषण की जितनी विविधताएँ उपलब्ध हैं, भाषा का जितना अनूठापन विद्यमान है, शिल्प की जितनी भंगिमाएँ मौजूद हैं, उन सबका समन्वित श्रेय शायद सबसे अधिक शरद जोशी को दिया जा सकता है।" 03 कला के नाम पर प्रचलित फॅशन, नकलीपन आदि विकृतियाँ जीवन को खोखला बना रही हैं। आज लोग अपने अभावों को कला के आवरण में छिपाने का भोंडा प्रयत्न करने लगे हैं, जिस पर

जोशी ने व्यंग्य किया है। भारतीयों का विदेशी प्रेम, आत्म-विज्ञापन एवं आत्मस्तुति का बोलबाला, क्रिकेट का हमारी मानसिकता पर हुआ बेतहाशा आक्रमण आदि विषयों पर जोशी ने व्यंग्य किया है। शरद जोशी परसाई की तरह किसी वाद से बध्द नहीं है। वे जो भी विसंगतियाँ सामने आती हैं उन पर सहज व्यंग्य की प्रतिक्रिया देते हैं। 'पुराने पेड की बातें' रचना में आज विश्वविद्यालयों में होनेवाले शोध कार्य पर ताना कसा है।

जोशी के व्यंग्य लेखन का फलक व्यापक है। शिक्षा, राजनीति, धर्म, एवं समाज में व्याप्त विसंगतियों पर इन्होंने व्यंग्यात्मक प्रहार किये हैं। 'उत्तम शिक्षा की व्यवस्था शीघ्र प्रवेश लें' रचना द्वारा गली गली में खुलते फिजूल शिक्षा संस्थानों की ओर हमारा ध्यान खींचा है। जहाँ शिक्षा शब्द दीर्घ लिखा जाता हो और 'शीघ्र' को 'हस्वा' वहाँ किस स्तर की शिक्षा दी जाएगी इसकी सहज कल्पना की जा सकती है। " 04 'हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे' रचना में मंत्री, अधिकारी तथा कर्मचारियों के भ्रष्टाचार पर व्यंग्य किया है। सरकारी दफ्तरों में रिश्वत के बिना कोई काम नहीं होता। अर्जी के साथ जब तक नोट नहीं लगाई जाती तब तक वह मंजूर नहीं होता। पब्लिक सेक्टर का हाल यह है कि वहाँ मुर्गी भी गायब हो जाती है और अंडा भी। एक बार प्राक अफसरशाही का अपना रंग है। जिसके कंधे पर लोक हित की रक्षा और देश विकास की जिम्मेदारी है वह भारतीय गरीबों के लिए प्राकृतिक प्रकोप सेभी भयंकर चीज है। एक बार प्राकृतिक प्रकोप से बचा जा सकता है लेकिन सरकारी कर्मचारियों के आक्रमण से कदापि नहीं। 'जीप पर सवार इल्लियाँ' रचना में जोशी ने इस सत्य को उजागर किया है।

समाजवाद के बड़े बड़े नारे लगाये गए परंतु आजादी के अडसठ वर्षों के बाद भी समाजवाद नहीं आया। हाँ, बेरोजगारी, महंगाई का साम्राज्य खूब फैला है। शरद जोशी गरीबी हटाओ के संदर्भ में व्यंग्य करते हुए लिखते हैं - "गरीबी हटाने के लिए सरकार कमर कसे हैं, लगता है हमें कुर्बानी करनी होगी - जो जहाँ है जिसकी जो गरीबी है, हटा ले। जैसे किसी व्यक्ति की गरीबी उसकी साइकिल में है तो वह उसे फेंक दे और स्कुटर मोल ले। जहाँ गरीबी दिखे हटाओ। हटाओ, हटाओ और वह हटेगा।" 05 शरद जोशी का अधिकांश व्यंग्य लेखन राजनीतिक है। सरकार चाहे काँग्रेस की हो या जनता पार्टी की उनपर उन्होंने व्यंग्यात्मक प्रहार

किए हैं। विद्रूपताओं को नष्ट करना और समाज व्यवस्था में सुधार करना उनके व्यंग्य का लक्ष्य है।

हरिशंकर परसाई एवं शरद जोशी के बाद रवींद्रनाथ त्यागी का नाम बड़े ही सम्मान के साथ लिया जाता है। हिंदी व्यंग्य विधा में यह 'व्यंग्यत्रयी' प्रसिद्ध है। त्यागी जी आधुनिक हिंदी व्यंग्य के प्रमुख हस्ताक्षर हैं, जिन्होंने लगभग तीन सौ से अधिक व्यंग्य रचनाएँ लिखी हैं। डॉ. धनंजय वर्मा ने इनके व्यंग्य सृजन को लेकर लिखा है कि "रवींद्रनाथ त्यागी एक और हरिशंकर परसाई के तीक्ष्ण और प्रखर व्यंग्य से अलग हैं, तो दूसरी ओर शरद जोशी आदि अन्य व्यंग्यकारों से अधिक गहन और भास्वर हैं। उनमें एक सहज और स्वच्छंद लेखन की भंगिमा हर जगह है और इसीलिए वह एक ओर जहाँ निष्कलुष हास्य की सृष्टि करते हैं वहीं दूसरी ओर किसी भी ग्रंथ से मुक्त व्यंग्य की रचना भी।" 06 त्यागी के अनुसार समाज की कुरीतियों का भंडा-फोड करने का कार्य केवल व्यंग्य द्वारा ही हो सकता है। इनके व्यंग्य का झुकाव हास्य की तरफ है। 'इति श्री भगवान उवाच' तथा 'अंधे लोगों का देश' रचना में इन्होंने धर्म के तथाकथित संरक्षक साधु और संतो की बखिया उधेड़ उनका नंगा और विकृत सच हमारे सामने रखा है। केवल साधु संतो की करतुतों पर ही उन्होंने प्रहार नहीं किया है तो उनके आराध्य भगवान भी इनके व्यंग्य से नहीं चूके हैं, 'यदा यदा ही धर्मस्य' नामक रचना इसका उदाहरण है।

लोकतंत्र में 'प्रेस' चौथा आधार स्तंभ होता है। लोकतंत्र के विकास के लिए प्रेस का निर्भोक्त होना आवश्यक होता है। त्यागीजी ने पत्र - पत्रिकाएँ, प्रकाशक एवं संपादक आदि के क्षेत्र में व्याप्त विसंगतियों की खासी खबर ली है। लेखक को अपराध, सौक्स, जासूसी और अनौतिक प्रेम जैसे विषयों पर लिखना पड़ता है क्योंकि प्रकाशक की माँग होती है। 'अतिथिकक्ष' 'भित्ति-चित्र', 'शोक सभा' तथा देवदार के पेड की अधिकांश रचनाएँ साहित्य की विसंगतियों को पेश करती हैं। 'प्राप्त तु षोडशे वर्षे' रचना में दहेज समस्या पर प्रकाश डाला गया है। दहेज के कारण लडकी के शादी की चिंता उसके गरीब माँ-बाप को दिन-रात लगी रहती है। आज भी माँ बाप जल्दी से जल्दी लडकी के हाथ पिले कर छुटकारा पाना चाहते हैं। अनमेल विवाह, बाल विवाह, अनमेल विवाह दहेज की कुप्रथा के कारण ही होते रहे हैं। दहेज न देनेवाली लडकियों को दुहाजू, विधुर या बहुपत्नियों के स्वामी के साथ बाँध दिया

जाता है। कसाई के यहाँ बकरी की जो हालत होती है वौसी ही हालत इन गरीब लडकियों की होती है। त्यागी ने एक ओर स्त्रियों की दयनीय और भयावह अवस्था का चित्रण किया है तो दूसरी ओर स्त्रियों पर श्रृंगारिक हास्य भी लिखे हैं।

आजादी के बाद प्रशासकिय और राजनीतिक क्षेत्र में आयी हुई विसंगतियों पर त्यागी जी ने व्यंग्य किया है। राज्य तथा देश की समस्याओं का समाधान खोजनेवाले तथा कानून पारित करनेवाले विधानसभा तथा लोकसभा आज उददण्ड छात्रों की कक्षा जैसे बन गए हैं। यहाँ नारेबाजी, चप्पलबाजी, घूसाबाजी और गाली - गलौज सब कुछ होता है। नेताओं की आचरण भ्रष्टता, दल-बदल की राजनीति, भूदान आंदोलन की विसंगतियाँ, महंगी तथा जानलेवा न्याय प्रणाली, कानून के संरक्षक पुलिस तथा लोगों के भगवान कहे जानेवाले डॉक्टर, किस तरह भक्षक बन चुके हैं इस पर त्यागीजी ने व्यंग्य किया है। अस्पताल की परिभाषा देते हुए त्यागी ने लिखा है - "अस्पताल उस जगह का नाम होता है जहाँ आदमी बिमारी की हालत में दाखिल होता है और फिर मुर्दा होकर बाहर निकलता है।" 07 त्यागी ने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सरकारी दफ्तर के बाबू और उनके क्रियाकलापों को अपने अधिकतर व्यंग्य रचनाओं का कथानक बनाया है।

आधुनिक व्यंग्यकारों में लतीफ़ घोषी का स्थान महत्वपूर्ण है। इनका ध्यान सामाजिक विडम्बनाओं के प्रति ज्यादा रहा है। भुखमरी, कालाबाजारी, नारी शोषण, मिथ्याडम्बर, धर्म के नाम पर ढकोसला बाजी, परदा प्रथा, दहेज प्रथा, शिक्षा व साहित्य के क्षेत्र में होनेवाली घपलेबाजी पर उनकी नजर बार-बार गई है और काफी गहराई तक गयी है। स्वयं मुस्लिम होने के बावजूद भी मुस्लिम समाज की कट्टरता या कुरीतियों पर व्यंग्य करना उनके साहस और हिम्मत का परिचायक है। इन्होंने मुस्लिमों की बुराइयों को उजागर करते हुए उनकी परम्पराओं, रीति-रिवाजों को हमारे सामने रखा है। मुस्लिम समाज अशिक्षित है इसी कारण पुरानी मान्यताओं को ज्यों का त्यों लिए हुए हैं। अपने समाज की पुरानी मान्यताओं की कटु आलोचना करते हुए घोषी लिखते हैं - "उसके तीन लडके और सात लडकियाँ थी। दो बीवियाँ थी। वह पक्का मुसलमान था, इसलिए उसने परिवार नियोजन नहीं करवाया था। इसलिए उसे विश्वास था की मरने के पश्चात खुदा जन्त बख्शेंगा" 08

घोषी ने अपने समाज की आर्थिक विपन्नता और शोषण का कारण ढूँढ लिया है। मौलवी और मुलतवी समाज सुधार का कोई कार्य करने नहीं देते और सरकार वोट खो देने के डर से इन्हें कुछ नहीं कहती। 'पी के घर आज प्यारी दुल्हनियाँ चली' रचना में डाकू और पुलिस से तुलना करते हुए लेखक ने कहा है डाकू से तो बचकर सही सलामत आ ही जाओगे लेकिन जब पुलिस के चंगुल में फँसोगे तो भीख माँगने के लायक होकर ही निकलोगे। आज की वास्तविकता है कि पुलिस या आर.टी.ओ. से डाकू भले हैं। 'एक टिकट का सवाल है बाबा' में घोषीने राजनीतिक व्यंग्य करते हुए पौदाइशी काँग्रेसी के गुण बताए हैं " मेरा जन्म कस्तूरबा गाँधी अस्पताल में हुआ है अतः मैं गाँधीवादी हूँ। अस्पताल में खादी की चादर पर सोया, चूड़ी तक खादी की पहनता हूँ। मेरे सम्बन्ध जेल मंत्री से, जेल की महिलाओं से, चोरों से, नेताओं से अच्छे हैं। हरीजनों के बीच हरिजन, आदिवासियों के बीच आदिवासी बन जाता हूँ। यदि मुझे अल्पसंख्यक रिजर्व सीट से टिकट देने का आश्वासन दें तो मैं लतीफ़ घोषी के बदले लतीफ़ मिरी नाम रख लूँगा।" 09 घुसखोरी, भ्रष्टाचार तथा चुनाव में पैसे देकर वोट खरीदने जैसी घटनाओं की तीखे शब्दों में निंदा की है।

व्यंग्य विधा के विकास में घोषी के पश्चात नरेंद्र कोहली, केशवचंद वर्मा, डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी एवं डॉ.शंकर पुणताम्बेकर, बरसानेलाल चतुर्वेदी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इन के व्यंग्य में केन्द्रस्थ आम आदमी है। उन्होंने व्यवस्था को और उसको सहयोग देनेवाली हर साजिश को अपने व्यंग्य का निशाना बनाया है। साहित्य, समाज, राजनीति, शिक्षा, प्रेम, पूँजी, न्याय, धर्म, कला, संस्कृति आदि क्षेत्रों की विसंगतियाँ इनके पौने व्यंग्य का कथ्य बनी हैं। प्रेम जनमेजय आधुनिक व्यंग्य की तीसरी पीढ़ी के सशक्त हस्ताक्षर है जो व्यंग्य को एक गंभीर कर्म तथा सुशिक्षित मस्तिष्क के प्रयोजन की विधा मानते हैं। परंपरागत विषयों से हटकर उन्होंने समाज में व्याप्त आर्थिक विसंगतियों तथा सांस्कृतिक प्रदूषण को चित्रित किया है। राजधानी में गँवार, बेशर्मेव जयते, पुलिस ! पुलिस, मौं नहीं माखन खायो, आत्मा महाठगिनी, शर्म मुझको मगर क्यों आती, कौन कुटिल खल कामी इनके प्रमुख व्यंग्य संकलन हैं। प्रेम जनमेजय की दृष्टि बहुत पौनी है, इसलिए वह अपने समाज में व्याप्त विसंगतियों पर प्रहार करती हैं।

निष्कर्ष :-

हिंदी व्यंग्य विधा को समृद्ध और सम्पन्न बनाने का काम हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, रवीन्द्रनाथ त्यागी, डॉ.शंकर पुणताम्बेकर, लतीफ घोंघी एवं प्रेम जनमेजय आदि लेखकों ने किया है। स्वातंत्र्योत्तर कालीन भारतीय समाज में व्याप्त विसंगतियाँ और विषमताओं पर व्यंग्य के माध्यम से प्रहार कर एक स्वस्थ भारतीय समाज के निर्माण का प्रयत्न इन्होंने किया है। बेरोजगारी, महंगाई, भ्रष्टाचार, नैतिक मूल्यों का हास, धर्म के क्षेत्र में होनेवाले ढकोसलें, राजनेताओं की चरित्रहीनता, शिक्षा संस्थानों का व्यापारीकरण, विदेशियों का अंधानुकरण, नारी शोषण, समाज में व्याप्त अंधश्रद्धाएँ, गरीबी, दहेज प्रथा आदि इनके लेखन के प्रमुख विषय रहे हैं। भारतेन्दु हरिश्चंद्र से सुत्रपात हुए इस आधुनिक व्यंग्य ने स्वातंत्र्योत्तर काल की अमानवीय, भ्रष्ट, कलुषित परम्पराओं, रीतियों पर प्रहार करके मनुष्य तथा समाज जीवन को अधिक सुंदर, भव्य और उदात्त बनाने का प्रयत्न किया है।

संदर्भ :-

- 1) डॉ.श्यामसुंदर घोष : रोशन हाथों की दस्तकें - पृ.8
- 2) डॉ. सुरेश माहेश्वरी - स्वातंत्र्योत्तर हिंदी व्यंग्य का मूल्यांकन - पृ. 169
- 3) डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी - हिंदी व्यंग्य के प्रतिमान - पृ. 15
- 4) शरद जोशी : दूसरी सतह - पृ. 78
- 5) शरद जोशी : रहा किनारे बौठ पृ. 47
- 6) व्यंग्यम् - 5 (जून 78) पृ. 11
- 7) रवीन्द्रनाथ त्यागी : आत्मलेख, पृ. 56
- 8) लतीफ घोंघी : बुद्धजीवी की चप्पलें पृ. 13
- 8) लतीफ घोंघी : बुद्धजीवी की चप्पलें पृ. 102

